द्वितीय सर्ग

अभिषेक

(शृंगार छन्द)

चले गजपुर[1] के वासी आज।
कहाँ जिज्ञासा लिए विशेष।
राजमार्गों पर अविरल धार।
उमड़ता है जनसिन्धु अशेष ।।1।।

हुआ है उन्मुख यह समुदाय।
रंगशाला पुर की जिस ओर।
सघन एकत्रण क्रमशः हुआ।
विवर्धित[2] होता प्रतिपल शोर ।।2।।

सकौतुक करते वार्तालाप।
परीक्षित होंगे राजकुमार।
द्वार पर नयन सभी के लगे।
बहुत पाता औत्सुक्य[3] उभार ।।3।।

पञ्च पाण्डव शत कौरव पुत्र।
पधारे फिर क्रमशः आचार्य[4]।
पितामह सपत्नीक धृतराष्ट्र।
सुशोभित हैं बहुसंख्यक आर्य ।।4।।

पाण्डु सुत दोनों वे आचार्य।
सुशोभित थे सप्तर्षि समान।
दीप्त कौरवधृत मुकुट असंख्य।
ऋक्षगण[5] का उपजाते भान ।।5।।

---

1. हस्तिनापुर; 2. बढ़ता हुआ; 3. उत्सुकता; 4. द्रोण तथा कृप; 5. तारागण।

बड़े ही प्रखर धाम[1] से युक्त ।
देवव्रत थे या राजित भानु ।
विपुलवपु[2] सारयुक्त[3] श्रीमान्[4] ।
नृपति थे या कि अचल[5] का सानु[6] ।।6।।

उठे कुलगुरु[7] देने संकेत ।
परीक्षण हुआ घोर आरम्भ ।
विविध आयुध कौशल था आज ।
वीरता का करता परिरंभ[8] ।।7।।

कुन्त[9] में अग्रज कुन्ती पुत्र ।
गदा में भीम सुयोधन श्रेष्ठ ।
और असि के चालन में यमज[10] ।
सकल वीरों में ठहरे ज्येष्ठ ।।8।।

द्रोण का अंतेवासी[11] प्रेष्ठ[12] ।
शस्त्र-संचालन-कला-निशान्त[13] ।
चला दिखलाने कौशल नव्य[14] ।
सुयोधन-मानस हुआ अशान्त ।।9।।

पार्थ का लाघव[15] देखा दिव्य ।
देखकर आयुध[16] चित्र-विचित्र ।
ठगे से दर्शक बैठे मूक ।
मूर्ति मानो या लेखितचित्र ।।10।।

तभी गूँजा पुरजन[17] जयघोष ।
पार्थ का देखा विक्रम आज ।
धन्य हो वीर कीर्ति-आगार[18] ।
रखोगे हथिनापुर की लाज।।11।।

---

1. तेज; 2. विशाल देह वाले; 3. बलवान; 4. धन सम्पदा युक्त; 5. पर्वत; 6. शिखर; 7. कृपाचार्य; 8. आलिंगन; 9. भाला; 10. जुड़वाँ भाई नकुल तथा सहदेव; 11. शिष्य 12. सबसे अधिक प्रिय; 13. घर 14. नवीन; 15. कुशलता; 16. अस्त्र; 17. नगरवासी; 18. घर ।

परम सन्तुष्ट हुए गुरु द्रोण।
वदन[1] पर फैल गयी मुस्कान।
पार्थ का जो है यह जयघोष।
वस्तुतः उनका है जयगान ॥12॥

देखकर कर ऐसा अद्भुत वीर्य[2]।
सुयोधन के उर लोटा सर्प।
कर रहा बार-बार फुंकार।
बहुत था आहत उसका दर्प ॥13॥

किया अर्जुन ने गुरु को नमन।
झुका था माल्य[3] ग्रहण को शीश।
बड़े हर्षित दोनों आचार्य।
पितामह देते थे आशीष ॥14॥

अभी ठहरो मत डालो कण्ठ।
जयश्री सी नीलोत्पल[4] माल।
कर्णगत हुई गिरा[5]—गंभीर।
हुआ भ्रू कुँचित गुरु का भाल ॥15॥

देखने लगे सभी उस ओर।
जहाँ से आयी थी आवाज।
खड़ा था रंगभूमि के द्वार।
कान्ति ही प्राकृत[6] जिसका साज ॥16॥

बढ़ा दृढ़ता से आगे वीर।
किया तब प्रांगण बीच प्रवेश।
सार[7] क्या आज हुआ साकार।
वीर रस ही धर आया वेश ॥17॥

---

1. मुख; 2. शक्ति 3. माला; 4. नील कमल; 5. वाणी; 6. नैसर्गिक; 7. बल।

प्रभामय कुण्डलयुत् युग कर्ण।
तप्त हेमाभ[1] देह थी दिव्य।
उमड़ता सा ऊर्जा का ज्वार।
एक उत्साह छलकता नव्य[2] ।।18।।

सघन कुंचित मानो अलिमाल[3]।
शिरोरूह[4] उड़ा रहा पवमान[5]।
व्योम ज्यों झाँक रहा हो नील।
गहन आयत[6] लोचन छविमान ।।19।।

कौन यह वृष-स्कन्ध[7] दृढ़ग्रीव[8]।
शिलानिभ[9] वक्षस्थल विस्तीर्ण।
कठिनता में लोहे का मान।
कर रहा जैसे सतत् विदीर्ण ।।20।।

अंशलम्बित[10] आयत कोदण्ड[11]।
निशितशर[12] पूरितदीर्घ निषंग[13]।
लटकता था कटि से करवाल[14]।
मान मानी का करने भंग ।।21।।

अहा कैसा आनन[15] अभिराम[16]।
लालिमायुक्त अनूठी कांति।
पूर्व में उदित हो रहे प्रात।
बाल रवि की होती थी भ्रांति[17] ।।22।।

दिखाए कुछ कौशल कुरूतनय।
हो उठा त्वरित[18] मत्त[19] जयघोष।
मही पर हुआ नहीं है अभी।
रिक्त विक्रम का अक्षय कोष ।।23।।

---

1. स्वर्ण की कांति; 2. नवीन; 3. भौरों की पंक्ति; 4. केश; 5. वायु; 6. दीर्घ; 7. सांड़ से पुष्ट कंधे वाला; 8. पुष्ट गर्दन वाला; 9. शिला के समान; 10. कंधे पर लटकता हुआ; 11. धनुष; 12. पैने तीर; 13. तूणीर; 14. तलवार; 15. मुख; 16. मनोहर; 17. भ्रम; 18. शीघ्र; 19. उन्माद भरा।

प्रदर्शन की अनुमति यदि मिले।
शस्त्र लाघव देखेगा आज।
धनञ्जयकृत कौशल से अधिक।
उपस्थित नागर[1] सकल समाज ॥24॥

विपुलवपु[2] आसनस्थ[3] कुरूराज।
तभी बोले थे गिरा गम्भीर।
करो प्रांगण में सर्वसमक्ष।
प्रदर्शन की अनुमति है वीर ॥25॥

देखने लगे उपस्थित सभी।
सविस्मय[4] उसका शस्त्र पटुत्व।
कला का अनुपम आज विलास।
प्रकट था धनुर्वेद का तत्व ॥26॥

सचेतन हुए विविध शस्त्रास्त्र।
मानते थे उसका आदेश।
वीरता का अनुपम वरदान।
मूर्तिमय ज्यों हो उठा अशेष[5] ॥27॥

अहा अनवरत[6] दीर्घ अभ्यास।
फलित होता क्षण-क्षण अवधान[7]।
लक्ष्य बस दिखता होता बिद्ध।
त्वरित इतना था हर संधान ॥28॥

बड़ा ही चपल[8] लयात्मक लास्य[9]।
मनोहर उसका पद विन्यास।
नहीं कोई भी उसकी युक्ति।
भासती थी जन को सायास[10] ॥29॥

---

1. नगरीय; 2. विशाल देह धारी; 3. सिंहासन पर बैठे; 4. आश्चर्य सहित;
5. पूर्णतः; 6. लगातार, अविच्छिन्न; 7. सावधानी, दत्तचित्तता; 8. चंचल;
9. नृत्य; 10. सप्रयास।

हुए थे आज पितामह मुग्ध।
कहा हे वीर धन्य तुम धन्य।
नहीं अध्येता[1] तुझसा वत्स।
विलोका धनुर्वेद का अन्य ॥30॥

पार्थ का करता हूँ आह्वान।
आज मैं द्वन्द्व युद्ध के हेतु।
उठाता है फिर देखो कौन।
वीरता का ऊँचा यह केतु[2] ॥31॥

वचन बोला अर्जुन हो कुपित।
अरे इसका तो मान अखर्व[3]।
करें यदि अनुज्ञप्त[4] आचार्य।
हरूँ मैं क्षण में इसका गर्व ॥32॥

तभी कुलगुरु बोले हे वीर।
प्रथमतः परिचय करो प्रदान।
मान्य कुरुवंशी पाण्डुकुमार।
कर रहे तुम जिसका आह्वान ॥33॥

किसी से भी लड़ बैठे व्यर्थ।
नहीं यह है कुलीन[5] का कार्य।
शत्रुता हो कि मित्रता वत्स।
समानों में होती व्यवहार्य ॥34॥

सामने प्रतिद्वन्द्वी[6] हो वीर।
चलाता कौन जाति की बात।
वंश का परिचय देते वहाँ।
शस्त्र के मात्र घात प्रतिघात ॥35॥

---

1. विद्यार्थी; 2. पताका; 3. विशाल; 4. अनुमत; 5. उच्च कुल का;
6. प्रतिस्पर्धी।

कभी देवों ने टाला युद्ध।
लड़ेंगे नहीं असुर हैं नीच।
या कि दानव बोले क्या लड़ें।
सामने केवल कपि या रीछ ॥36॥

ताड़का ताडन[1] से क्या विरत।
हुए राघव बस नारी जान।
सदा रण हेतु वीर सन्नद्ध।
वैर का जो करता आह्वान ॥37॥

नाम है गुरुवर मम राधेय।
अभी है कुरु नगरी में वास।
कौन सा वंश कौन हैं तात[2]।
युवक चुप रहा छोड़ उच्छ्वास ॥38॥

पुनः फिर बोल उठे आचार्य।
खड़े क्यों बालक बने विमूढ़।
स्वकुल परिचय तक यदि अज्ञात।
बड़ी उद्‌भूति[3] तुम्हारी गूढ़[4] ॥39॥

बनाता इतना बड़ा समाज।
उपेक्षित फिर भी रहता व्यक्ति।
देखता कोई नहीं कृतित्व।
मात्र पूछी जाती उत्पत्ति ॥40॥

नतानन[5] विगतप्रभ[6] था वीर।
उठे स्वर व्यग्र तभी समवेत[7]।
अरे यह क्या हो गया अनर्थ।
राजमाता हो गयीं अचेत ॥41॥

1. दण्ड देना; 2. पिता; 3. उत्पत्ति; 4. गहन, रहस्यमय, अज्ञात; 5. नीचे मुख किए हुए; 6. कांति हीन; 7. एक साथ।

धारणाबद्ध[1] मान्यता - ग्रस्त।
मानता यह समाज क्या तर्क।
क्षुब्ध हो गये देख यह दृश्य।
गये छिप घन मेघों में अर्क[2] ।।42।।

देख यह व्यग्र हुआ नर व्याघ्र।
सुयोधन गरज उठा हो क्रुद्ध।
सभा में बैठे हैं धर्मज्ञ[3]।
बात पर होती नीति विरुद्ध ।।43।।

राग[4] से युक्त सविष[5] जो नित्य।
पंक[6] से होता है उद्भूत।
सरसता से सौरभ से सदा।
तामरस[7] पाता मान प्रभूत ।।44।।

रजत[8] मौक्तिक मणि कंचन रत्न।
मात्र गुण से हैं संग्रह योग्य।
नहीं उद्भूति पूछता जगत।
अंगना[9] मानी जाती भोग्य ।।45।।

भले ही लांछन युक्त हिमांशु[10]।
रूप का बनता है उपमान[11]।
गुणी जन को न सोहता कभी।
गुणी का ही करना अपमान ।।46।।

देखकर भी उसके भुजदण्ड।
प्रखर यह तेज और पुरुषत्व।
विविध शस्त्रों का अनुपम ज्ञान।
समझते नहीं सुधीजन[12] तत्व ।।47।।

---

1. धारणाओं से बँधा हुआ; 2. सूर्य; 3. धर्म के ज्ञाता; 4. लालिमा, लिप्सा; 5. मृणल सहित, विष सहित; 6. कीचड़, मलिनता; 7. कमल; 8. चाँदी; 9. सुन्दरी; 10. चन्द्रमा; 11. जिससे उपमा दी जाय; 12. विद्वान लोग।

वही क्षत्रिय कहलाने योग्य।
पाल जो सकता क्षत्रिय धर्म।
जानना है इस जग को आज।
वर्ण क्रम का है बस यह मर्म ।।48।।

मात्र शासन यदि क्षत्रिय कर्म।
छत्र धारण ही यदि अनिवार्य।
बनाकर इन्हें अंग का भूप।
करूँगा इसी समय शुभ कार्य ।।49।।

हुए विस्मित सब देखा दृश्य।
हुआ अभिषिक्त[1] आज राधेय।
पुनः बोला वह वचन कठोर।
कहो आचार्य और कुछ ज्ञेय ।।50।।

अरे पाण्डव बनते अभिजात[2]।
कर रहे अवहेला[3] जो व्यक्त।
झाँक कर देखें अपना आत्म।
प्रवाहित क्या तुममें कुरुरक्त ।।51।।

मित्रता पर तेरी हे वीर।
आज से न्यौछावर सर्वस्व।
हुआ गद्गद् बोला राधेय।
रहें साथी इसके हरिदश्व[4] ।।52।।

दिया है तुमने इतना मान।
मुझे इस मैत्री पर अभिमान।
जगत में सख्यभाव[5] है न्यून।
नहीं अब मैं यह सकता मान ।।53।।

---

1. जिसका राज्याभिषेक किया गया है; 2. उच्च कुलोत्पन्न; 3. तिरस्कार;
4. सूर्य; 5. मैत्री।

अकिंचन[1] पर बरसाया नेह।
हृदय के इतने आप उदार।
अहेतुक[2] अनुकम्पा की बन्धु।
क्षुब्ध इस जन पर ये उपकार ।।54।।

रखा है जिस पर अंग किरीट[3]।
तुम्हारा रहे सदा यह भाल।
तुम्हारे हेतु करूँगा युद्ध।
सामने आये चाहे काल ।।56।।

देख यह दृश्य सजल थे नेत्र।
बढ़े अधिरथ निज सुत की ओर।
नमन कर उनको लिपटा कर्ण।
अश्रु थे छोड़ चुके दृग कोर ।।56।।

धार कर धनुष और तूणीर।
कर रहा अर्जुन को आहूत।
बना था विक्रम का अवतार।
अरे बस यह तो निकला सूत ।।57।।

पड़े पिघले लोहे की भाँति।
भीम के शब्द कान में घोर।
अरे ओ सूत पुत्र रथ हाँक।
चला तू बस घोड़ों पर जोर ।।58।।

कर्ण बोला हे राजकुमार।
बोल यह रहा तुच्छ अभिमान।
समय आने पर होगा ज्ञात।
कौन है लघुतर[4] कौन महान ।।59।।

---

1. अति निर्धन; 2. बिना कारण ही; 3. मुकुट; 4. छोटा।

जाति गोत्रों की करते बात।
स्वकुल इतिहास तुम्हें कुछ ज्ञात।
आज कहने को [करते बाध्य।
सुनो तो तुम कितने अभिजात ॥60॥

चन्द्रवंशी[1] को सन्तत रही।
श्रेष्ठता ही कुमार वरणीय[2]।
पूज्य अबला[3]—त्यागी दुष्यन्त।
आर्य शान्तनु हैं अनुकरणीय[4] ॥61॥

दास अति मकरध्वज[5] के हुए।
असुर-तनया[6] पर थे अनुरक्त।
बनाया दानी अंगज[7] वृद्ध।
नहुष का था उनमें शुभ रक्त ॥62॥

और जो नहुष[8] बने नाकेश[9]।
हुई पौलौमी[10] धन्य विशेष।
ऊढ़सप्तर्षि[11] पालकी बैठ।
प्राप्त की गति[12] इतनी सविशेष ॥63॥

बहुत दृष्टान्त[13] अभी हैं शेष।
वंश पर फिर इतनी आसक्ति।
व्यक्ति से बनता वंश महान।
वंश से नहीं विनिर्मित व्यक्ति ॥64॥

विश्रवा[14] जात विज्ञ[15] द्विज रूप।
भक्त शिव का लंकेश[16] कुलीन।
अमित अपकारी जग का हुआ।
राम ने किया सवंश कुलीन[17] ॥65॥

1. कौरव चन्द्रवंशी थे; 2. वरण करने योग्य; 3. शकुन्तला को त्यागने वाले; 4. मछुआरे की कन्या का वरण करने वाले; 5. कामदेव; 6. शर्मिष्ठा असुरराज वृषपर्वा की पुत्री 7. पुरु; 8. प्रसिद्ध प्रतापी चन्द्रवंशी नरेश; 9. इन्द्र की अनुपस्थिति में इन्हें स्वर्ग का अधिपति बनाया गया था; 10. पुलोम की पुत्री शची, इन्द्राणी; 11. सप्तर्षियों द्वारा ढोयी जाती हुई; 12. अगस्त्य के शाप से नहुष सर्प बने; 13. उदाहरण; 14. एक प्रसिद्ध ऋषि, रावण के पिता; 15. विद्वान ज्ञानी; 16. लंका पति रावण; 17. नष्ट करना।

भले कितना भी हो सद्वंश[1]।
विगुणता[2] करती उसको व्यर्थ।
शरासन[3] हो या मानव कुटिल।
लक्ष्य[4] पाने में हैं असमर्थ ॥66॥

वारुणी[5] कालकूट[6] पीयूष[7]।
हुए हैं एक स्रोत[8] उद्भूत।
जानता सर्वलोक यह तथ्य।
भिन्न हैं किन्तु प्रभाव प्रभूत ॥67॥

जहाँ कुल वर्ण वंश ही पूज्य।
गुणी है अवहेला का पात्र।
भाग्य में उस संस्कृति के लिखी।
समुन्नति नहीं पराभव[9] मात्र ॥68॥

परम विज्ञानी हो या वीर।
नीतिविद् या फिर हो धर्मज्ञ।
श्रेष्ठता सीमित उसका ज्ञान।
अधूरा यदि वह नहीं गुणज्ञ[10] ॥69॥

तभी उठ पड़े सभी गणमान्य।
सकल आयोजन हुआ समाप्त।
कर्ण को एक रहा सन्तोष।
मित्रवर आज हुआ है प्राप्त ॥70॥

दोहा—लौट चले नागर[11] सकल है बहुचर्चित कर्ण।
तुष्ट सुयोधन रुष्ट नर[12] कुलगुरु, द्रोण विवर्ण[13] ॥71॥

□□

1. उच्च कुल, अच्छा बाँस; 2. गुणहीनता, बिना ज्या का; 3. धनुष; 4. उद्देश्य, लक्ष्य; 5. मदिरा; 6. विष जो सागर मंथन के समय निकला; 7. अमृत; 8. इन सबका स्रोत-समुद्र; 9. पराजय, अवनति; 10. गुणग्राही; 11. नगरवासी, भद्रलोग; 12. अर्जुन; 13. आभाहीन।